IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 28, Issue 10, Series 9 (October, 2023) 60-63
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

आधुनिक भारत के निर्माण में राजा राममोहन राय के विचारों का योगदान

सचिन सिंह (शोधार्थी)
के०जी०के०(पी०जी०) कॉलेज
मुरादाबाद
(महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखंड यूनिवर्सिटी बरेली)

डॉ० सुरेश चन्द
शोध पर्यवेक्षक एवं प्रोफेसर व प्रभारी
इतिहास विभाग
के०जी०के० (पी०जी०) कॉलेज
मुरादाबाद

सारांश –
18 वीं सदी के उत्तरार्ध व 19 वीं सदी के पूर्वार्ध का काल भारत में सामाजिक कुप्रथाओं, आडम्बरों, कर्मकांडों, व छुआछूत जैसी कुरीतियो का काल रहा है यूरोप में जब पुनर्जागरण 14 वी और 15 वीं सदी से प्रारम्भ होकर 16 वी सदी तक पूर्ण हो चुका था उस समय भारतीय समाज पुनर्जागरण के तत्वों कला, विज्ञान, साहित्य से पूर्णतः अनभिज्ञ व जात– पात, अस्पर्शता जैसी सामाजिक बुराइयों के साथ–साथ सती प्रथा, दास प्रथा, विधवा पुनर्विवाह निषेध जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों से घिरा हुआ था। वस्तुत तत्कालीन भारतीय समाज एक रूढ़िवादी व तीव्र सामाजिक विषमता आधारित समाज था जिसमें कर्मकांड का बोलबाला था। परन्तु 22 मई 1772 में बंगाल में जन्मे राजा राममोहन राय ने इन सभी सामाजिक कुप्रथाओ व बुराइयों के विरुद्ध एक सशक्त सामाजिक – धार्मिक आंदोलन खड़ा कर दिया। उन्होंने एकेश्वरवाद का नारा देते हुए एकेश्वरवाद पर आधारित तुहफत–उल–मुहवादीन पुस्तक की रचना की तथा अपनी उदारवादी दृष्टिकोण के तहत आत्मीय सभा का गठन किया जिसका उद्देश्य एक ईश्वर को मानकर भारतीय हिंदू समाज का उद्धार करना था। इसी क्रम में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना कर उसके माध्यम से तत्कालीन भारतीय समाज में फैली दूषित परंपराओं को दूर करने का प्रयास किया वैसे तो राजा राममोहन राय के विचारों व सामाजिक कार्यों का कार्यकाल 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध व 19 में सदी के पूर्वार्ध में रहा है परंतु राममोहन राय ने भारतीय समाज में अपने सामाजिक– राजनीतिक विचारों से जो क्रांति पैदा की उसने भारतीय समाज को लंबे समय तक प्रभावित किया । जिसका प्रभाव वर्तमान में भी भारतीय समाज पर दिखता है। उन्होंने ही भारतीय समाज में ऐसे आदर्शों व मूल्यों का प्रादुर्भाव किया जो आधुनिक भारत के निर्माण में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं।

मुख्य शब्द *– आधुनिक, समाज, सिद्धान्त ,कुरीतियां, परम्परा, वर्तमान।*

राम मोहन राय का जन्म 1772 को बंगाल के राधा नगर में एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके जन्म के समय भारतीय समाज धर्मप्रधान होने के साथ ही अनेक कुप्रथा व दूषित परंपराओं से घिरा हुआ था व भारतीय समाज में स्वतंत्रता, समानता, वैज्ञानिक चिंतन जैसी पश्चिम की अवधारणाएं अनुपस्थित थी। ऐसे में राम मोहन रॉय के बचपन में एक ऐसी घटना घटी जिसने राम मोहन राय के हृदय को प्रभावित किया और वे सामाजिक व धार्मिक सुधार हेतु संघर्षरत हो गए वस्तुत उनके बड़े भाई जगमोहन की मृत्यु के बाद उनकी भाभी को सती (एक सामाजिक कुप्रथा जिसमें पति की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को जिंदा ही पति के साथ चिता में जला दिया जाता था) होने के लिए विवश किया गया और उनके न चाहते हुए भी बलपूर्वक उनको जला कर मार दिया गया । परंतु इस लोमहर्षक व अमानवीय ,वीभत्स सामाजिक प्रथा को राजा राममोहन राय स्वीकार न कर सके और उन्होंने इस प्रथा को कानूनी रूप से अस्वीकार करने तक इसके प्रति एक सशक्त आन्दोलन तैयार करने का प्रण किया । चूँकि तात्कालिक भारतीय समाज अशिक्षित व रूढ़िवादी था जो सभी कुप्रथाओं का धर्म के आधार पर समर्थन करता था। अतः राम मोहन राय ने सती प्रथा के साथ–साथ बाल विवाह, बहुविवाह, जाति प्रथा, अस्पर्शता व अशिक्षा के विरुद्ध भी आजीवन संघर्ष करने का संकल्प लिया जो धर्म के आधार पर भारतीय समाज मे प्रचलित थी।

राजा राममोहन और उनके सिद्धांत व कार्य – राममोहन रॉय ने भारतीय समाज के पुनरुत्थान के लिए अनेक विचार व सिद्धांत प्रस्तुत कर महत्वपूर्ण कार्य किए उनके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित है ।

- ईश्वर एक है वह संसार का निर्माणकर्ता व रक्षक हैं।
- आत्मा अमर है।
- आत्मिक उन्नति व ईश्वर की अनुभूति के लिए प्रार्थना आवश्यक है।
- कोई पुस्तक या पुरुष मोक्ष का साधन नहीं है।
- मूर्ति पूजा का विरोध।

ऽ ज्ञान–विज्ञान के लिए अंग्रेजी भाषा आवश्यक है।

वस्तुत उनके विचार व सिद्धांत तत्कालीन भारतीय समाज को सुधारने के लिये अत्यन्त आवश्यक थे राममोहन राय समझते थे कि किसी भी कुप्रथा या परंपरा का विरोध तब तक नहीं किया जा सकता जब तक उस परंपरा को उचित ठहराने वाले तत्वों को पहचान कर उनको व्यर्थ व महत्वहीन साबित न कर दिया जाए। सती प्रथा जो भारतीय उच्च हिंदू समाज में व्यापक रूप से विद्यमान थी को तब तक खत्म नहीं किया जा सकता जब तक सती प्रथा को सही ठहराने वाले व्यक्तियों के तर्कों को खारिज न कर दिया जाए। क्योंकि वह जानते थे कि देश की जनता तर्क शक्ति के अभाव में अंधविश्वासों व कुरुतियों की खाई में गिरती जा रही है। अतः अपने तर्कों को आधार बना कर राजा राममोहन राय ने निम्न कार्य किये।

ऽ 1809 में अपना पहला ग्रंथ अरबी व फारसी में लिखा जिसका नाम तुहफत उल मुवाहिदीन था। जिसके माध्यम से धर्म के नाम पर कुरुतियों व दूषित परंपराओं का समर्थन कर रहे कट्टरपंथी व धर्मावलंबियों को उन्होंने अपने तर्कों से उत्तर विहीन कर दिया।

ऽ 1814 में आत्मीय सभा की स्थापना की जिसमें दार्शनिक चर्चा होती थी तथा एकेश्वरवाद पर बल दिया जाता था।

ऽ वेदांत सोसाइटी की स्थापना ।

ऽ 1822 में फारसी में मिरात उल अखबार व संवाद कौमुदी जैसे पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन।

ऽ उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कलकत्ता कॉलेज की स्थापना।

ऽ 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना कर राजा राममोहन राय ने हिंदू समाज में सुधार का प्रयास किया चुंकि ब्रह्म समाज वेदों और उपनिषदों पर विश्वास रखता था व उसको मानने वाले लोग घूम घूमकर वेदों व उपनिषदों का प्रचार करते थे व सती प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह जैसी कुप्रथाओं का विरोध करने के साथ साथ एकेश्वरवाद पर बल देते थे। अतः ब्रह्म समाज ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने व समाज को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऽ उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सामान पर भारत मे न्यूनतम आयात शुल्क व भारतीय निर्यात पर इंग्लैंड में उच्च निर्यात शुल्क लगाने का विरोध किया।

ऽ राजा रामोहन ने ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारीके एकाधिकार को भी गलत बताते हुए विरोध दर्ज कराया।

ऽ 1829 में सती प्रथा को कानूनी रूप से खत्म करने में राजा राममोहन राय की अत्यंत व्यापक भूमिका रही है उन्होंने ब्रिटिश सरकार के सामने सती जैसी अमानवीय प्रथा का कड़ा विरोध किया साथ ही ब्रिटिश सरकार से ऐसी प्रथा के खिलाफ कानून पारित करवाया । उन्ही के प्रयासों से सती प्रथा को 1829 में वायसराय विलियम बेंटिक के कार्यकाल में गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

ऽ राजा राममोहन ने ही बंगाली जमीदारो के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई।

ऽ राजा राममोहन राय ने न्यूनतम किराया निर्धारित करने की मांग की।

आधुनिक भारत मे राजा राममोहन राय का योगदान – राजाराम मोहन राय के उपरोक्त कार्यों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को खत्म करने व समाज को शिक्षित करने के साथ साथ आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। साथ ही राम मोहन राय ने समाज के वंचित व शोषित वर्ग को मुख्यधारा में लाने के लिए अनेकों प्रयास किए तथा तात्कालिक रूढ़िवादी भारतीय समाज को अपने आदर्शों व सिद्धांतों से अत्यंत व्यापक स्तर पर प्रभावित किया।

आधुनिक भारत के निर्माण में राजा राममोहन राय का एक प्रमुख स्थान है वस्तुतः राम मोहन राय ने ऐसे सिद्धांत व विचार प्रस्तुत किए जो आधुनिक भारत को राष्ट्र राज्य बनाने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं यदि आधुनिक भारत के संदर्भ में बात करें तो आजादी से पहले व बाद में जो भी सामाजिक परिवर्तन कानून के रूप में सामने आए हैं वो सभी राजा राममोहन राय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित रहे हैं जैसे–

ऽ सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829

ऽ हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856

ऽ बाल विवाह निरोध अधिनियम 1929

- हिंदू स्त्रियों का संपत्ति पर अधिकार अधिनियम 1937
- अलग रहने और भरण–पोषण हेतु स्त्रियों का अधिकार अधिनियम, 1946
- जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950
- विशेष विवाह अधिनियम 1954
- अस्पृश्यता अपराध अधिनियम, 1955
- हिन्दू उत्तराधिकारी अधिनियम, 1956
- हिन्दू अप्राप्तवयता और संरक्षकता अधिनियम 1956
- हिन्दू दत्तक ग्रहण और भरण–पोषण अधिनियम 1956
- स्त्रियों व कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम 1956
- दहेज निरोधक अधिनियम 1961
- नागरिक अधिकार सुरक्षा अधिनियम, 1976
- बाल विवाह निरोधक अधिनियम (संशोधित) 1978
- सतीप्रथा निषेध अधिनियम, 1987 भारतीय संसद द्वारा पारित
- राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम,1990
- घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005
- मुस्लिम महिला (विवाह पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019

इन सब अधिनियमो के अतिरिक्त भारतीय संविधान में भी बहुत से अनुच्छेद समानता और समता पर आधारित है जो महिलाओ के अतिरिक्त बच्चो, बुजुर्गो अन्य शोषित व वंचित वर्ग के लिये विशेष प्रबंध करते है ये सभी उपबन्ध भी कही न कही राजा राममोहन राय के सिद्धांतों पर आधारित प्रतीत होते है।

निष्कर्ष – उपरोक्तानुसार कहा जा सकता है कि राजा राममोहन ने धर्म निरपेक्षता और आध्यात्मिकता तथा पश्चिमी एवं पूर्वी दर्शन के बीच समन्वय स्थापित किया। वस्तुत राममोहन के साथ साथ कई अन्य महापुरुषो जैसे – ईश्वर चंद्र विद्यासागर, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, डी०के० कर्वे, महात्मा गांधी आदि ने भी महिलाओं के हितो के लिए व भारतीय सामाजिक कुरुतियों के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन चलाया जिससे भारतीय समाज से अस्पर्शता, बाल विवाह, बहुविवाह जैसी अनेको कुरुतियों व प्रथाओ को खत्म करने में मदद मिली साथ ही महिला शिक्षा को भी बढ़ावा मिला परन्तु राम मोहन का कार्यकाल इन सभी महापुरुषों से पहले का है और उन्होंने ही सबसे पहले आधुनिक भारत की कल्पना कर आधुनिकता की नीव डाली । राममोहन ने ही 18वीं 19वीं सदी में अपने आदर्शों और सिद्धांतों के द्वारा भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर फैली कुरुतियों व आडम्बरों का जीवन पर्यन्त विरोध किया और ऐसे विचार प्रस्तुत किए जिस पर आधुनिक भारत का निर्माण संभव हुआ । राममोहन ने ही अंग्रेजी के प्रचार प्रसार पर बल दिया जो वर्तमान वैश्विक भाषा बन गई है उन्होंने ही सर्वप्रथम अभिव्यक्ति एवं विचार की स्वतन्त्रता, प्रेस की आजादी नारी मुक्ति जैसे वर्तमान में अत्यन्त प्रासंगिक मुद्दो को समर्थन किया बाद में भारत की आजादी के बाद भारतीय संविधान में स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा जैसे आधारभूत तत्वों पर बल दिया गया साथ ही कई सामाजिक कुप्रथाओ व कुरीतियों को कानून के माध्यम से निषेध घोषित कर दिया गया। साथ ही महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार देने की व्यवस्था संविधान में की गई। इसी प्रकार सभी प्रकार का शोषण निषेध करते हुए एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की गई जो समता और समानता पर आधारित है। तदुपरांत भारत सरकार ने समय समय पर विभिन्न कानूनो, अधिनियमों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों व महिलाओं के हितों की रक्षा की है जो राजा राममोहन राय के विचारों के अनुरूप ही हैं। उपरोक्त बातो से स्पष्ट है कि राजा राममोहन ने जो विचार प्रस्तुत किये उनका प्रभाव तत्कालीन भारतीय सामाजिक सुधारो तक ही सीमित न हो कर आधुनिक भारत के निर्माण में भी अतुलनीय है । अतः राजा राममोहन राय को आधुनिक भारत का पिता कहने के साथ–साथ आधुनिक भारत का निर्माणकर्ता भी कहा जा सकता है।

सन्दर्भ सूची –

1. वी०पी० वर्मा (1975) ,आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मी नारायण अगरवाल प्रकाशक , आगरा।
2. राममोहन रॉय एवं आनंद मुल्कराज (एडि), सती (1996) दिल्ली, दरियागंज, बी०आर० पब्लिकेशन
3. सोमेंद्रनाथ टेगौर ((1966), राजा राममोहन रॉय , साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
4. गोयल (2020) राजा राममोहन रॉय, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन ।
5. डॉक्टर सुरेंद्र नाथ मित्तल "समाज और राज्य रू भारतीय विचार 1967" इलाहाबाद एकेडमी, इलाहाबाद
6. मधुर अथेया, (2013) दयानन्द सरस्वती, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन ।
7. पूनम उपाध्याय (1990) राजा राममोहन के सामाजिक राजनीतिक आर्थिक एवं शेक्षिक विचार, नई दिल्ली, मित्तल पर्वलकेशन ।
8. डॉ० जायसवाल, दीपत (2017) राजा राममोहन रॉय लखनऊ, अशोक मार्ग, भारत प्रकाशन8. जोगेंद्र चन्दर घोष (एडिट) 1867 ओरिएंटल प्रेस, कोलकाता
9. जोगेंद्र घोष (1885), इंग्लिश वर्क ऑफ राममोहन, ओरिएंटल प्रेस, कोलकाता।
10. ममता झा (2013) समाज सुधारक राजा राममोहन रॉय, नई दिल्ली प्रभात प्रकाशन।